* परामर्श के प्रकार (Type of counselling) :-

(1) नैदानिक परामर्श (clinical counselling) :-

सर्वप्रथम नैदानिक परामर्श शब्द का प्रयोग एच० बी० पेपिंस्की ने किया था। इसमें समस्या का विश्लेषण करने तथा समस्या का उपचार सुझाने के लिए भी प्रयास किया जाता है। इसके अंतर्गत निदान, उपचार एवं प्रतिरोधन (Prevention) और-और ज्ञान के विस्तार हेतु की जाने वाली शोध के लिए प्रशिक्षण तथा वास्तविक अभ्यास को आत्मसात किया जाता है।

(2) मनोवैज्ञानिक परामर्श (Psychological counselling) :-

इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आर० डब्लू० हाइट ने किया था, इनके अनुसार परामर्शदाता एक चिकित्सक के समान होता है तथा इसमें सामान्य बातचीत के माध्यम से परामर्शदाता सेवार्थी को उसकी दबी हुई इच्छाओं, भावनाओं एवं संवेगों को अभिव्यक्ति में सहायता करता है।

(3) मनोचिकित्सकीय परामर्श (Psychotherapeutic counselling)

सामाजिक कुसमायोजन समाप्त करने के दृष्टिकोण से मनोचिकित्सात्मक परामर्श की अत्यधिक उपयोगिता है।

(4) छात्र-परामर्श :- (Students counselling) :-

यह छात्रों को समस्याओं से संबंधित होता है :- शिक्षण संस्थाओं के चयन, अध्ययन विधियों के समायोजन एवं पाठ्यक्रम के चुनाव इत्यादि से संबंधित सूचनाएँ अर्थात समग्र शैक्षिक वातावरण से संबंधित समस्याओं से संबंधित होता है।

https://nsp.gov.in/ViewStudentVerificationDetails
3/3

(5) ~~नियोजन~~ स्थानापन या परामर्श (Placement counselling) :-

यह सेवार्थी की अभिरुचियों, दृष्टिकोणों तथा योग्यताओं के अनुरूप व्यवसाय चयन में सहायता करता है, अर्थात जो व्यक्ति जिस प्रकार की योग्यता रखता है उसे वैसा पद प्राप्त होता है।

(6) वैवाहिक परामर्श (Marriage counselling) :-

विवाह संबंधी से जुड़ा हुआ परामर्श वैवाहिक परामर्श होता है जो लड़कों तथा लड़कियों के विवाह की आयु, उससे संबंधित अन्य जानकारियों को प्रदान करता है।

(7) व्यवसायिक एवं जीविकोपार्जन परामर्श :-
(Vocational and Career counselling) :-

यह किसी भी क्षेत्र में या किसी भी तरह के व्यवसाय चयन तथा जीविकोपार्जन के क्षेत्र में प्रदान किया जाता है जो किसी प्रशिक्षित व्यक्ति या परामर्शदाता द्वारा प्रदान किया जाता है।